Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 03 July 2018 19:46

: □□□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ : □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□-□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ : □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□-□□□□ □□ □□ □□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ :

□□□□□□ □□□□□□

□□□□□□□□□ :किसी से सहमति अथवा असहमति तो अलग बहस बन सकती है□ लेकिन इतना जरूर है कि दिनेश जुयाल से भेंट करना किसी को भी □क अलहदा अनुभूति करा सकता है□

बरेली के अमर उजाला में संपादक पद से रिटायरमेन्ट के बाद जुयाल जी अब देहरादून में बस ग□ हैं□ यहां देहरादून में भी वे हिंदुस्तान दैनिक में सम्पादक रह चुके हैं□ मिला, तो लगा कि मुझसे मिलने की ख्वाहिश उन्हें मुझसे ज्यादा थी□ □क ही ब□ भूखंड में तीनों भाइयों के परिवार रहते हैं□ सब का अलग मकान, लेकिन □क ही परिसर□ रसोई भी □क□

गेट से घुसते ही दो-मंजिले मकान की सी□ियों पर ख□ जुयाल जी देख कर चहक प□े□ कंधे पर सवार थी □क पालतू बिल्ली, और नीचे भौंकता कुत्ता लैब्राडोर□ स्वर आत्मीय□ बाद में पता चला कि दोनों □क ही थाली में खाना खाते हैं, बिना गुर्रा□□ नो झंझट, नो लपड-झप□□

इधर जुयाल जी से हाथ मिलाने की कोशिश की ही थी, कि बिल्ली उचक कर मेरे कंधे पर सवार हुई□ बिना टिकट□ लैब्राडोर तो इतना कूदने लगा, मानो जन्म-जन्मांतर का रिश्ता हो□ उम्र बमुश्किल □क बरस, मगर स्नेह और ऊर्जा का विशाल भंडार□ शिशुवत□

कोई भी औपचारिकता नहीं□ जिसके जो मन करे, करता रहे□ कुछ देर तक मेरे कंधे पर मुफ्त सफर करने के बाद बिल्ली तो राजाजी अभ्यारण्य में रहने वाली अपनी ब□ी भांजियों (शायद बड़ी बिल्लियों) से भेंट-मुलाकात करने निकल गयी, लेकिन इधर कुत्ता अपने जात-बिरादरी यानी हम जैसे वाच-डॉग्स से चुहल करने लगा□ रिमोट और जुयाल जी का चश्मा मुंह में दबोचना उसका खास शगल है□ बेध□क इतनी, कि जिस प्लास्टिक वाली पाइप से उसे डांटा

Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 03 July 2018 19:46

जाता है, उसे वह चबा लेता है□

रागनी भाभी तो जन्मना प्रसन्न व्यक्तित्व□ बनि मुस्कान के उनकी कोई भी बात शुरू ही नहीं होती□ भोजन तो कुछ ऐसी खास रुचकर प्रवधि से बनाती हैं कि कोई भी शख्स 25 फीसदी अतरिक्त राशन उठा ले□ मोटे लोग सावधान□ बातचीत में अव्वल, जुआल जी की वाकई अर्धांगनी□ जुयाल जी के जीवन के हर लम्हे-मो□ उन्हें न केवल याद है, बल्कि उसका हर स्पंदन, दंश और आनंद भी खूब जानती है भाभी□ अभी कुछ दनिों से वे बीमार हैं□ इसलि□ हमारे आने की खबर सुनकर उनकी देवरानी कचिन में जुट गई□ वह भी गजब की व्यक्तित्व नकि्ली□

दनिेश जी से लंबी बात हुई□ रकिर्ड कयिा□ वे खुलकर बोलते हैं, जो सवाल आप न पूछ पा□, उसका भी जवाब दे देंगे□ बेहचिक□ लेकनि कई मसलों पर साफ कह देंगे कि:-यह ऑफ द रकिर्ड है□

रात को शर्बत-□-जन्नत हचिककर आत्मसात कयिा□ आधा पेग □क्स्ट्रा खींच लयिा मैंने□ भोजन के बाद सुबह स्वादष्टि पोहा□ लैब्राडोर से नातेदारी बन ही गई थी□ अब शायद उसे वदिाई का अहसास हो चुका था, वह शांत लग रहा था□ गम के बादल छंट जा□, यह सोच कर मैंने चलते वक्त उसका माथा चूम लयिा□

बस फरि क्या था, अपनी औकात में आ गया□ आदमकद छलांगे-कुलांचें मुझ पर भरने लगा□ उसकी लार से सारा कप□ा भीगने के डर से मै जुयाल जी के भाई की कार में झपट कर घुस गया, जो मुझे पेट्रोलयिम यूनविर्सटी परसिर छो□ ने जा रहे थे□

आधा घंटा के सफर के दौरान जुयाल जी के छोटे भाई ने मुझे पहाड़ के बारे में कई मोटी-मोटी मगर गहरी जानकारयिां थमा दी□

अब बताइ□, कि अब कोई कैसे भूल सक्ता है जुयाल जी के परविार को□

(□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□-□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□)